विश्वविद्यालय ने दी हरित क्रान्ति के जनक डा. बोरलॉग को भावभीनी श्रद्धांजलि

पंतनगर। 16 सितम्बर, 2009। विश्वविद्यालय के गाँधीहाल में हरित क्रान्ति के जनक तथा नोबेल पुरस्कार से सम्मानित डा. नार्मन ई. बोरलॉग को विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट सहित निदेशकों, अधिष्ठाताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अमेरिका के डलास शहर में बीमारी से जूझ रहे 95 वर्षीय डा. बोरलॉग का 12 सितम्बर, 2009 को निधन हो गया था।

कुलपति डा. बिष्ट ने डा. बोरलॉग के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि उनकी मृत्यु से पंतनगर विश्वविद्यालय ने एक दोस्त, दार्शनिक एवं मार्गदर्शक खो दिया है। डा. बोरलॉग का जीवन परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि 25 मार्च, 1914 को अमेरिका के आयोवा स्टेट में एक किसान के घर में जन्मे बोरलॉग ने स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधि मिनिसोटा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। डा. बिष्ट ने डा. बोरलॉग को 245 मिलियन लोगों की जान बचाने वाला बताया। उन्होंने बताया कि डा. बोरलॉग को पंतनगर के वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों पर बहुत अधिक भरोसा था; उन्होंने ही पंतनगर को हरित क्रांति की जन्म स्थली कहा।

विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक प्रसार डा. के.पी. सिंह ने डा. बोरलॉग को एशिया में भूखों के लिए मसीहा बताया। उन्होंने कहा कि डा. बोरलॉग विविध व्यक्तित्व के धनी थे तथा उन्हे किसानों से बहुत प्यार था और किसान भी उन्हे बहुत सम्मान देते थे। वे काम करने के आदि थे तथा 56 वर्ष की अवस्था में भी, जब उन्हे नोबेल पुरस्कार मिला, वे स्टूल पर बैठकर पौधों में क्रासिंग कर रहे थे। डा. सिंह ने यह भी बताया कि भारत का दूसरा सबसे बड़ा पुरस्कार पद्म विभूषण भी वर्ष 2006 में डा. बोरलॉग को प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के शोध निदेशक डा. डी.पी. सिंह ने बताया कि डा. बोरलॉग ने अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद अमेरिका में पहले फॉरेस्टर तत्पश्चात् डू पोंट में वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया एवं उसके बाद रॉकफेलर फॉउनडेशन में कार्यरत रहते हुए मैकसिकों में गेहूँ की बौनी प्रजतियों का विकास किया जिनमें सोनार 64 तथा नरमा रोजा मुख्य थीं जिनको भारत, पाकिस्तान तथा अन्य देशों में किसानों तक पहुँचाया गया तथा यहां हरित क्रांति का उद्भव हुआ।

डा. बोरलॉग पंतनगर विश्वविद्यालय के 16 मार्च, 1971 को हुए 8वें एवं 14 मार्च, 2005 को आयोजित 22वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्हे विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टर ऑफ फिलॉसफी की मानद उपाधि से भी विभूषित किया गया। शोक सभा में उपस्थित वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने खड़े होकर 2 मिनट का मौन रखा तथा डा. बोरलॉग की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की। डा. बोरलॉग अब नहीं हैं लेकिन खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाने के लिए यह देश विशेष रूप से पंतनगर विश्वविद्यालय उन्हें हमेशा याद रखेगा।

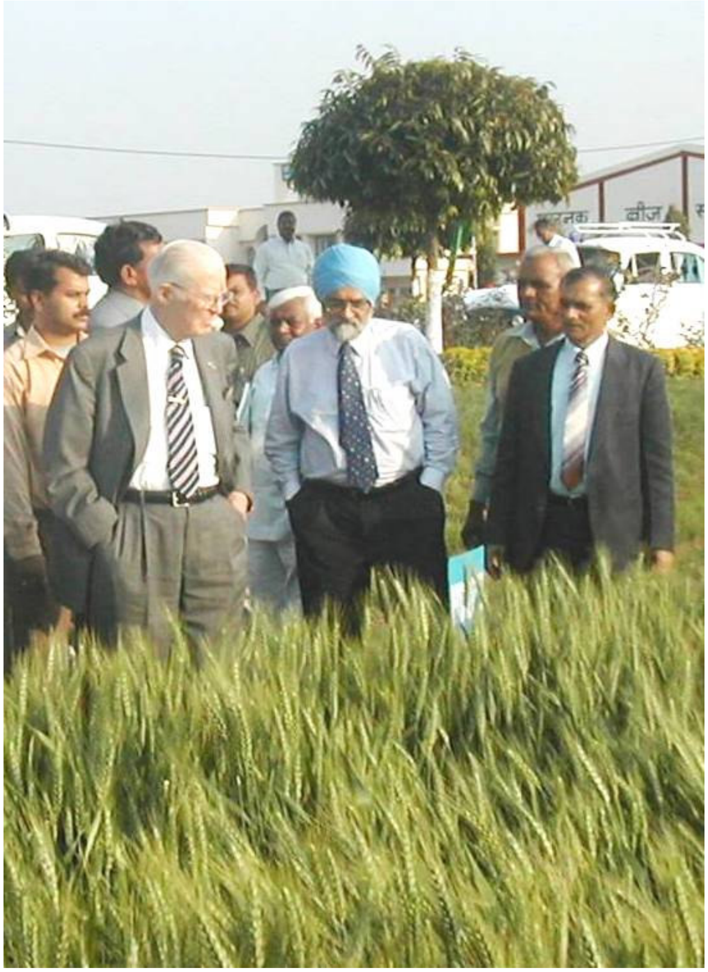

विश्वविद्यालय के प्रजनक बीज उत्पादन केन्द्र पर गेहूँ के खेत का निरिक्षण करते हुए डा. नॉर्मन ई. बोरलॉग।